



Shodhpith

International Multidisciplinary Research Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)

Volume: 2

Issue: 4

July-August 2026

बदलती वैश्विक भू-राजनीति और भारत की रक्षा कूटनीति: स्वतंत्रता के बाद का ऐतिहासिक अध्ययन

मुकुल कुमार

पूर्व अस्सिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा विभाग, माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

Article Info: (Received- 13/04/2026, Accepted- 10/5/2026, Published- 05/07/2026)

DOI- [10.64127/Shodhpith.2026v2i4001](https://doi.org/10.64127/Shodhpith.2026v2i4001)

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने अपनी विदेश नीति और रक्षा कूटनीति का विकास बदलती वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप किया। शीत युद्ध की द्विध्रुवीय व्यवस्था से लेकर वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था तक भारत की रक्षा कूटनीति में निरंतर परिवर्तन एवं परिपक्वता दिखाई देती है। प्रारम्भिक वर्षों में भारत ने गुटनिरपेक्षता, पंचशील तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को अपनी विदेश नीति का आधार बनाया, जबकि वर्तमान समय में सामरिक साझेदारियों, रक्षा सहयोग, रक्षा उत्पादन, समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा तथा इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसे विषय भारतीय रक्षा कूटनीति के प्रमुख आयाम बन चुके हैं। यह शोध आलेख स्वतंत्रता के बाद भारत की रक्षा कूटनीति के ऐतिहासिक विकास, बदलती वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों तथा समकालीन चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द- रक्षा कूटनीति, भू-राजनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति, इंडो-पैसिफिक, सामरिक साझेदारी, आत्मनिर्भर भारत।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रीय सुरक्षा केवल उसकी सैन्य शक्ति पर आधारित नहीं होती, बल्कि उसकी विदेश नीति, कूटनीतिक संबंधों, आर्थिक क्षमता, तकनीकी विकास तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर भी निर्भर करती है। इ.स. की सदी में वैश्विक शक्ति संतुलन तेजी से परिवर्तित हो रहा है। अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, रूस-यूक्रेन संघर्ष, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का बढ़ता सामरिक महत्व, समुद्री सुरक्षा, साइबर युद्ध, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा रक्षा प्रौद्योगिकी में तीव्र विकास ने वैश्विक भू-राजनीति को नया स्वरूप प्रदान किया है।

भारत, जो विश्व की प्रमुख उभरती शक्तियों में से एक है, इन परिवर्तनों के अनुरूप अपनी रक्षा कूटनीति को निरंतर सुदृढ़ कर रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत की रक्षा नीति का उद्देश्य केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता, समुद्री सुरक्षा, वैश्विक शांति, रक्षा सहयोग तथा सामरिक स्वायत्तता को भी इसमें सम्मिलित किया गया। इस प्रकार भारत की रक्षा कूटनीति समय के साथ अधिक सक्रिय, बहुआयामी एवं रणनीतिक रूप से परिपक्व होती गई।



वैश्विक भू-राजनीति की अवधारणा

वैश्विक भू-राजनीति अंतरराष्ट्रीय संबंधों का वह महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है, जिसके अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाता है कि किसी राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संसाधन, समुद्री एवं स्थलीय मार्ग, सैन्य शक्ति, आर्थिक क्षमता, तकनीकी प्रगति तथा राजनीतिक हित उसकी विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक शक्ति-संतुलन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। भू-राजनीति का मूल आधार यह है कि भूगोल केवल भौतिक सीमाओं का निर्धारण नहीं करता, बल्कि वह किसी राष्ट्र की सामरिक प्राथमिकताओं, कूटनीतिक संबंधों और वैश्विक प्रभाव को भी दिशा प्रदान करता है। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भू-राजनीति का दायरा पारंपरिक सैन्य शक्ति से आगे बढ़कर ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार, साइबर स्पेस, अंतरिक्ष, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु परिवर्तन तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं तक विस्तृत हो चुका है।

भू-राजनीति शब्द का व्यवस्थित प्रयोग सर्वप्रथम स्वीडिश राजनीतिक वैज्ञानिक रुडोल्फ केजेलन ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में किया। उन्होंने राज्य को एक जीवित राजनीतिक इकाई मानते हुए यह प्रतिपादित किया कि किसी राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति उसके राजनीतिक व्यवहार, सुरक्षा नीति तथा विस्तार की संभावनाओं को प्रभावित करती है। उनके अनुसार राज्य केवल प्रशासनिक संस्था नहीं, बल्कि भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक तत्वों से निर्मित एक सजीव संरचना है, जिसकी सुरक्षा और विकास उसके भौगोलिक परिवेश पर निर्भर करते हैं।

आधुनिक भू-राजनीतिक चिंतन का सैद्धांतिक आधार ब्रिटिश भूगोलवेत्ता सर हैलफोर्ड जॉन मैकिंडर ने अपनी प्रसिद्ध फ़ार्टलैंड थ्योरी के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि यूरेशिया का मध्यवर्ती भू-भाग विश्व की सामरिक शक्ति का केंद्र है और जो शक्ति इस क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित करेगी, वह विश्व राजनीति में निर्णायक प्रभाव स्थापित कर सकती है। यद्यपि समय के साथ इस सिद्धांत की आलोचना भी हुई, तथापि आधुनिक भू-राजनीतिक विमर्श में इसका अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

मैकिंडर के सिद्धांत के उत्तर में अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक निकोलस जॉन स्पाइकमैन ने फ़र्मलैंड सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार विश्व राजनीति में वास्तविक सामरिक महत्व यूरेशिया के तटीय क्षेत्रों का है, क्योंकि विश्व की अधिकांश जनसंख्या, उद्योग, समुद्री व्यापार तथा सैन्य शक्ति इन्हीं क्षेत्रों में केंद्रित है। स्पाइकमैन के विचारों ने शीत युद्ध काल में अमेरिका की सामरिक नीति को गहराई से प्रभावित किया तथा आज भी इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की रणनीतिक अवधारणाओं में इसकी स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त विश्व व्यवस्था दो महाशक्तियों संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले द्विध्रुवीय शक्ति-संतुलन में विभाजित हो गई। इस काल में भू-राजनीति का प्रमुख आधार सैन्य गठबंधन, परमाणु प्रतिरोध, वैचारिक प्रतिस्पर्धा तथा प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार था। शीत युद्ध की समाप्ति (1991) के पश्चात विश्व व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए और धीरे-धीरे बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय हुआ, जिसमें चीन, भारत, यूरोपीय संघ, रूस तथा अन्य उभरती शक्तियों की भूमिका निरंतर बढ़ती गई।

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्विक भू-राजनीति की प्रकृति में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। आज सैन्य शक्ति के साथ-साथ आर्थिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी नवाचार, ऊर्जा संसाधनों पर नियंत्रण, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, समुद्री संचार मार्ग, दुर्लभ खनिज संसाधनों की उपलब्धता तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का नियंत्रण भी किसी राष्ट्र की सामरिक शक्ति का प्रमुख आधार बन चुके हैं। वर्तमान में भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं, जहाँ आर्थिक साधनों का उपयोग भी रणनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जा रहा है। वर्तमान वैश्विक भू-राजनीतिक परिदृश्य में अमेरिका-चीन रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, रूस-यूक्रेन युद्ध, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का बढ़ता सामरिक महत्व, दक्षिण चीन सागर में समुद्री विवाद, वैश्विक ऊर्जा संकट तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के पुनर्गठन ने अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन को नई दिशा प्रदान की है। इन घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भविष्य की विश्व राजनीति केवल सैन्य शक्ति पर आधारित नहीं होगी, बल्कि आर्थिक, तकनीकी, समुद्री तथा डिजिटल शक्ति भी उतनी ही निर्णायक होगी।

भारत के संदर्भ में वैश्विक भू-राजनीति का विशेष महत्व है क्योंकि भारत हिंद महासागर क्षेत्र के केंद्र में स्थित है तथा पश्चिम एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं अफ्रीका के मध्य एक महत्वपूर्ण सामरिक सेतु का कार्य करता है। विश्व के ऊर्जा परिवहन का एक बड़ा भाग तथा अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण हिस्सा हिंद

महासागर से होकर गुजरता है। यही कारण है कि भारत ने अपनी विदेश नीति एवं रक्षा कूटनीति में हिंद महासागर क्षेत्र, इंडो-पैसिफिक, समुद्री सुरक्षा, बहुपक्षीय सहयोग तथा रणनीतिक स्वायत्तता को प्रमुख स्थान दिया है।

समकालीन भारत की भू-राजनीतिक रणनीति एक्ट ईस्ट नीति, पड़ोसी प्रथम सागर (Security and Growth for All in the Region), इंडो-पैसिफिक महासागरीय पहल (IPOI), आत्मनिर्भर भारत तथा रक्षा उत्पादन में स्वदेशीकरण जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इन पहलों का उद्देश्य भारत की सामरिक स्वायत्तता को सुदृढ़ करना, क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देना तथा बदलती वैश्विक शक्ति-संरचना में भारत की प्रभावी भूमिका सुनिश्चित करना है।

स्वतंत्रता के बाद भारत की रक्षा कूटनीति का विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की रक्षा कूटनीति का विकास देश की बदलती सुरक्षा आवश्यकताओं, अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन, क्षेत्रीय चुनौतियों तथा विदेश नीति की प्राथमिकताओं के अनुरूप हुआ। प्रारम्भिक वर्षों में भारत ने अपनी विदेश नीति का आधार शांति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील तथा सामरिक स्वायत्तता पर रखा। किंतु समय के साथ बदलते वैश्विक एवं क्षेत्रीय परिदृश्यों जैसे— शीत युद्ध, भारत-चीन युद्ध, भारत-पाकिस्तान संघर्ष, परमाणु नीति, वैश्वीकरण, आतंकवाद, इंडो-पैसिफिक रणनीति तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने भारत की रक्षा कूटनीति को अधिक व्यावहारिक, बहुआयामी एवं सक्रिय स्वरूप प्रदान किया। आज भारत की रक्षा कूटनीति केवल सैन्य सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि रक्षा प्रौद्योगिकी, संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा उत्पादन, समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष सहयोग, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत तथा रणनीतिक साझेदारियों तक विस्तृत हो चुकी है।

(1) आदर्शवादी एवं गुटनिरपेक्ष चरण (1947-1962)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ऐसी विदेश एवं रक्षा नीति का निर्माण किया जिसका आधार विश्व शांति, उपनिवेशवाद का विरोध, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा गुटनिरपेक्षता था। भारत ने किसी भी सैन्य गुट नाटो अथवा वारसा संधि में सम्मिलित होने के स्थान पर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई। 1954 में भारत और चीन के मध्य पंचशील सिद्धांतों को स्वीकार किया गया, जिनमें एक-दूसरे की संप्रभुता का सम्मान, आक्रमण न करना, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत सम्मिलित थे। इस अवधि में भारत की रक्षा कूटनीति का प्रमुख उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय सहयोग, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को सुदृढ़ करना तथा नवस्वतंत्र देशों के मध्य विश्वास का निर्माण करना था। यद्यपि इस काल में भारत ने रक्षा आधुनिकीकरण की अपेक्षा विकास एवं आर्थिक पुनर्निर्माण को प्राथमिकता दी, परंतु 1962 के भारत-चीन युद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया कि आदर्शवादी विदेश नीति के साथ-साथ प्रभावी सैन्य तैयारी और यथार्थवादी रक्षा कूटनीति भी अनिवार्य है। इस युद्ध के पश्चात भारत ने रक्षा बजट में उल्लेखनीय वृद्धि की तथा अनेक देशों के साथ रक्षा सहयोग को सुदृढ़ करना प्रारम्भ किया।

(2) यथार्थवादी एवं सामरिक सुदृढ़ीकरण का चरण (1962-1991)

1962 के युद्ध के पश्चात भारत की रक्षा कूटनीति में व्यावहारिकता का समावेश हुआ। भारत ने अपनी सैन्य क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ रक्षा उपकरणों की खरीद, सैन्य प्रशिक्षण तथा तकनीकी सहयोग के लिए सोवियत संघ, ब्रिटेन और फ्रांस सहित अनेक देशों के साथ संबंधों को सुदृढ़ किया। 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों ने यह सिद्ध किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि प्रभावी कूटनीतिक समर्थन से भी सुनिश्चित होती है। इस काल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अगस्त 1971 में संपन्न भारत-सोवियत शांति, मैत्री एवं सहयोग संधि थी। इस संधि ने भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रणनीतिक समर्थन प्रदान किया और बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान भारत की कूटनीतिक स्थिति को सुदृढ़ किया। यह संधि भारतीय रक्षा कूटनीति के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ मानी जाती है क्योंकि इसने भारत की सामरिक सुरक्षा तथा क्षेत्रीय प्रभाव को सुदृढ़ किया। इसी अवधि में भारत ने स्वदेशी रक्षा उत्पादन, मिसाइल विकास तथा परमाणु क्षमता के विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए। 1974 में पोखरण में किए गए शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट ने भारत की सामरिक क्षमता को नई पहचान प्रदान की तथा रक्षा कूटनीति को नई दिशा दी।



(3) उदारीकरण, रणनीतिक स्वायत्तता एवं वैश्विक साझेदारी का चरण (1991-2014)

1991 में शीत युद्ध की समाप्ति तथा आर्थिक उदारीकरण के पश्चात भारत की रक्षा कूटनीति में व्यापक परिवर्तन हुए। सोवियत संघ के विघटन के कारण भारत ने बहुध्रुवीय विदेश नीति अपनाई और अमेरिका, रूस, फ्रांस, इज़राइल, जापान तथा यूरोपीय देशों के साथ रक्षा सहयोग को सुदृढ़ किया। रक्षा कूटनीति का उद्देश्य केवल हथियाओं की खरीद तक सीमित न रहकर रक्षा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, संयुक्त अनुसंधान, सैन्य प्रशिक्षण तथा संयुक्त सैन्य अभ्यास तक विस्तृत हो गया। 1998 में पोखरण-II परमाणु परीक्षणों के पश्चात भारत पर अनेक आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए, किंतु भारत ने रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए अपनी परमाणु नीति को विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध तथा पहले उपयोग न करने के सिद्धांत पर आधारित किया। इसके परिणामस्वरूप भारत की सामरिक विश्वसनीयता में वृद्धि हुई और 2005 के भारत-अमेरिका असैनिक परमाणु समझौते ने दोनों देशों के रणनीतिक संबंधों को नई ऊँचाई प्रदान की। इसी काल में भारत ने रूस के साथ ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना, इज़राइल के साथ रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं निगरानी प्रणालियों तथा फ्रांस के साथ रक्षा एवं अंतरिक्ष सहयोग को भी सुदृढ़ किया। संयुक्त सैन्य अभ्यास जैसे— मालाबार, वरुण तथा इंद्र भारत की रक्षा कूटनीति के महत्वपूर्ण उपकरण बनकर उभरे।

(4) सक्रिय रक्षा कूटनीति एवं बहुआयामी रणनीतिक सहयोग का चरण (2014-वर्तमान)

2014 के पश्चात भारत की रक्षा कूटनीति अधिक सक्रिय, बहुआयामी तथा वैश्विक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। इस अवधि में एक्ट ईस्ट नीति पड़ोसी प्रथम, सागर (Security and Growth for All in the Region) इंडो-पैसिफिक महासागरीय पहल (IPOI) तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रमों ने भारत की सामरिक नीति को नई दिशा प्रदान की। भारत ने अमेरिका, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, जापान, रूस तथा अनेक आसियान देशों के साथ रक्षा सहयोग का विस्तार किया। भारत ने क्वाड (QUAD) के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, मुक्त एवं समावेशी समुद्री व्यवस्था तथा नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को सुदृढ़ करने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA), COMCASA तथा BECA जैसे समझौतों ने भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग को नई ऊँचाई प्रदान की। वर्तमान समय में भारत रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रहा है। मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत स्वदेशी लड़ाकू विमान, मिसाइल प्रणाली, युद्धपोत, ड्रोन, साइबर सुरक्षा प्रणाली तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा तकनीकों का विकास किया जा रहा है। साथ ही भारत विश्व के अनेक देशों को रक्षा उपकरणों का निर्यात भी कर रहा है, जिससे रक्षा कूटनीति को आर्थिक एवं सामरिक दोनों दृष्टियों से नई शक्ति प्राप्त हुई है।

समग्रतः स्वतंत्रता के बाद भारत की रक्षा कूटनीति ने आदर्शवादी गुटनिरपेक्ष दृष्टिकोण से आरंभ होकर सामरिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग, रक्षा आधुनिकीकरण, तकनीकी आत्मनिर्भरता तथा वैश्विक रणनीतिक सहभागिता पर आधारित एक परिपक्व एवं बहुआयामी स्वरूप ग्रहण किया है। बदलती वैश्विक भू-राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप भारत ने अपनी रक्षा कूटनीति को निरंतर अनुकूलित किया है, जिसके परिणामस्वरूप वह आज केवल दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय शक्ति ही नहीं, बल्कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र तथा वैश्विक रणनीतिक व्यवस्था का एक प्रभावशाली एवं उत्तरदायी भागीदार बन चुका है।

बदलती वैश्विक भू-राजनीति और भारत की रक्षा कूटनीति

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्विक भू-राजनीति तीव्र गति से परिवर्तित हो रही है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व व्यवस्था एकध्रुवीय स्वरूप से निकलकर बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर अग्रसर हुई है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस, भारत, यूरोपीय संघ तथा अन्य उभरती शक्तियाँ वैश्विक शक्ति-संतुलन को प्रभावित कर रही हैं। वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति का केंद्र केवल सैन्य शक्ति नहीं, बल्कि आर्थिक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी नवाचार, समुद्री सुरक्षा, साइबर स्पेस, अंतरिक्ष, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर नियंत्रण भी बन चुका है। इन परिवर्तनों ने विश्व की सुरक्षा अवधारणा तथा रक्षा कूटनीति की प्रकृति को भी मूल रूप से परिवर्तित किया है।

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में अमेरिका और चीन के मध्य बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा भू-राजनीति का सबसे

महत्वपूर्ण आयाम बन गई है। दक्षिण चीन सागर, ताइवान जलडमरूमध्य, सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी, वैश्विक व्यापार तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन को नई दिशा प्रदान की है। चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' तथा समुद्री विस्तारवादी नीति ने एशिया में सामरिक प्रतिस्पर्धा को और तीव्र किया है, जिसके परिणामस्वरूप भारत सहित अनेक देशों ने अपनी रक्षा एवं विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध (2022) ने वैश्विक भू-राजनीति को गहराई से प्रभावित किया है। इस संघर्ष ने ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं, रक्षा उत्पादन तथा सैन्य गठबंधनों की उपयोगिता को पुनः प्रमुख विषय बना दिया। इस युद्ध ने यह भी स्पष्ट किया कि आधुनिक युद्ध केवल पारंपरिक सैन्य संघर्ष नहीं, बल्कि आर्थिक प्रतिबंधों, साइबर हमलों, सूचना युद्ध, ड्रोन प्रौद्योगिकी तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से भी लड़े जा रहे हैं।

इन वैश्विक परिवर्तनों के अनुरूप भारत की रक्षा कूटनीति में भी उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। स्वतंत्रता के प्रारम्भिक दशकों में भारत ने गुटनिरपेक्षता, पंचशील तथा सामरिक स्वायत्तता को प्राथमिकता दी, जबकि वर्तमान समय में भारत ने रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए बहुपक्षीय रक्षा सहयोग, संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा प्रौद्योगिकी, रक्षा निर्यात तथा सामरिक साझेदारियों को अपनी रक्षा नीति का अभिन्न अंग बना लिया है। भारत आज अमेरिका, फ्रांस, रूस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, इजराइल, वियतनाम तथा अनेक अन्य देशों के साथ व्यापक रक्षा सहयोग स्थापित कर चुका है। भारत की समकालीन रक्षा कूटनीति का एक प्रमुख आधार हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शुक्त, समावेशी एवं नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था का समर्थन है। इसी उद्देश्य से भारत ने क्वाड के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान तथा ऑस्ट्रेलिया के साथ समुद्री सुरक्षा, मानवीय सहायता एवं आपदा राहत, साइबर सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा तथा उन्नत प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग को सुदृढ़ किया है। भारत की प्लागर तथा इंडो-पैसिफिक महासागरीय पहल इस व्यापक सामरिक दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बदलती वैश्विक परिस्थितियों ने भारत को रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता की दिशा में भी प्रेरित किया है। आत्मनिर्भर भारत तथा मेक इन इंडिया के अंतर्गत स्वदेशी लड़ाकू विमान, मिसाइल प्रणाली, युद्धपोत, हेलीकॉप्टर, ड्रोन, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रक्षा प्रणालियों के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। भारत आज रक्षा उपकरणों का आयातक होने के साथ-साथ अनेक देशों को रक्षा निर्यात करने वाला उभरता हुआ राष्ट्र भी बन चुका है। रक्षा निर्यात में वृद्धि भारत की रक्षा कूटनीति को आर्थिक तथा रणनीतिक दोनों स्तरों पर सुदृढ़ कर रही है। इसके अतिरिक्त, भारत ने मानवीय सहायता एवं आपदा राहत, संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों, समुद्री डकैती-रोधी अभियानों तथा क्षेत्रीय क्षमता निर्माण के माध्यम से अपनी रक्षा कूटनीति को मानवीय एवं सहयोगात्मक स्वरूप भी प्रदान किया है। हिंद महासागर क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाओं, महामारी तथा मानवीय संकटों के समय भारतीय सशस्त्र बलों की त्वरित सहायता ने भारत की अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता और जेट सिक्वोरिटी प्रोवाइडर की भूमिका को सुदृढ़ किया है।

अतः स्पष्ट है कि बदलती वैश्विक भू-राजनीति ने भारत की रक्षा कूटनीति को एक नए युग में प्रवेश कराया है। आज भारत की रक्षा नीति केवल सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि बहुपक्षीय सामरिक सहयोग, समुद्री सुरक्षा, साइबर एवं अंतरिक्ष सुरक्षा, रक्षा प्रौद्योगिकी, रक्षा निर्यात, रणनीतिक स्वायत्तता तथा वैश्विक शांति एवं स्थिरता को समान रूप से महत्व देती है। भारत ने बदलते अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन के अनुरूप अपनी रक्षा कूटनीति को इस प्रकार विकसित किया है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के साथ-साथ एक उत्तरदायी वैश्विक शक्ति के रूप में भी उभर सके।

भारत की रक्षा कूटनीति के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

इक्कीसवीं शताब्दी में भारत की रक्षा कूटनीति अनेक जटिल एवं बहुआयामी चुनौतियों का सामना कर रही है। बदलती वैश्विक भू-राजनीति, महाशक्तियों के मध्य बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, सीमाई विवाद, आतंकवाद, साइबर हमले, समुद्री सुरक्षा, उभरती प्रौद्योगिकियाँ तथा वैश्विक आर्थिक अस्थिरता ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा नीति को अधिक जटिल बना दिया है। भारत के लिए चुनौती केवल अपनी सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना नहीं है, बल्कि वैश्विक शक्ति-संतुलन में अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए बहुपक्षीय सहयोग, आर्थिक विकास तथा क्षेत्रीय स्थिरता के बीच संतुलन स्थापित करना भी है।



1. चीन की विस्तारवादी नीति एवं सीमा विवाद

भारत की रक्षा कूटनीति के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती चीन की बढ़ती सैन्य एवं सामरिक शक्ति है। वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर समय-समय पर उत्पन्न तनाव, सीमा क्षेत्रों में सैन्य अवसंरचना का तीव्र विकास तथा हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा रही है। इसके अतिरिक्त चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) तथा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), जो भारत के दावे वाले जम्मू-कश्मीर के गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र से होकर गुजरता है, भारत की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है।

2. पाकिस्तान प्रायोजित सीमा-पार आतंकवाद

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष सीमा-पार आतंकवाद निरंतर एक गंभीर चुनौती बना हुआ है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियाँ, नियंत्रण रेखा (LoC) पर घुसपैठ के प्रयास, ड्रोन के माध्यम से हथियार एवं मादक पदार्थों की तस्करी तथा आतंकवादी संगठनों को बाहरी समर्थन भारत की रक्षा कूटनीति को प्रभावित करते हैं। भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय सहयोग, खुफिया सूचना साझा करने तथा संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न वैश्विक मंचों पर व्यापक आतंकवाद-रोधी तंत्र की स्थापना का निरंतर समर्थन किया है।

3. हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा

हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र वर्तमान वैश्विक भू-राजनीति का केंद्र बन चुका है। इस क्षेत्र में अमेरिका, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस तथा अन्य शक्तियों की बढ़ती सक्रियता ने सामरिक प्रतिस्पर्धा को तीव्र कर दिया है। भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए समुद्री सुरक्षा, मुक्त एवं नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था तथा क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करे।

4. साइबर सुरक्षा एवं सूचना युद्ध

डिजिटल युग में साइबर हमले, रैनसमवेयर, सूचना युद्ध, दुष्प्रचार तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साइबर खतरों ने राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को व्यापक बना दिया है। महत्वपूर्ण सरकारी संस्थानों, रक्षा प्रतिष्ठानों, वित्तीय नेटवर्क तथा संचार अवसंरचना पर साइबर हमलों की संभावना निरंतर बढ़ रही है। इसलिए भारत के लिए साइबर सुरक्षा क्षमता का विकास तथा मित्र देशों के साथ साइबर सहयोग रक्षा कूटनीति की प्रमुख आवश्यकता बन गया है।

5. रक्षा प्रौद्योगिकी एवं आयात पर निर्भरता

यद्यपि भारत ने रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी अनेक उन्नत सैन्य प्रणालियों, इंजन प्रौद्योगिकी, अत्याधुनिक सेंसर, साइबर उपकरणों तथा उच्च तकनीकी रक्षा प्रणालियों के लिए विदेशी सहयोग पर आंशिक निर्भरता बनी हुई है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, युद्ध अथवा प्रतिबंधों की स्थिति में यह निर्भरता राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है। इसलिए रक्षा अनुसंधान, स्वदेशी नवाचार तथा निजी क्षेत्र की भागीदारी को और अधिक सुदृढ़ करना आवश्यक है।

6. वैश्विक शक्ति-संतुलन में रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना

भारत की विदेश एवं रक्षा नीति का मूल आधार रणनीतिक स्वायत्तता है। किंतु अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिमी प्रतिबंधों तथा बदलते वैश्विक गठबंधनों के बीच संतुलन बनाए रखना भारत के लिए एक जटिल कूटनीतिक चुनौती है। भारत को अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए विभिन्न वैश्विक शक्तियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने पड़ते हैं, जिससे उसकी स्वतंत्र विदेश नीति और रक्षा कूटनीति प्रभावित न हो।

7. समुद्री सुरक्षा एवं हिंद महासागर की चुनौतियाँ

हिंद महासागर भारत के ऊर्जा आयात, समुद्री व्यापार तथा सामरिक हितों का प्रमुख आधार है। समुद्री डकैती,

अवैध मछली पकड़ना, हथियार एवं मादक पदार्थों की तस्करी, समुद्री आतंकवाद तथा बाहरी शक्तियों की बढ़ती नौसैनिक उपस्थिति भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए चुनौती प्रस्तुत करती है। भारत के लिए समुद्री निगरानी, नौसैनिक आधुनिकीकरण तथा क्षेत्रीय समुद्री सहयोग को और अधिक सुदृढ़ करना आवश्यक है।

8. जलवायु परिवर्तन, महामारी एवं गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियाँ

जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएँ, महामारी, खाद्य एवं जल सुरक्षा, ऊर्जा संकट तथा मानवीय आपदाएँ आज राष्ट्रीय सुरक्षा के नए आयाम बन चुके हैं। हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियरों का पिघलना, समुद्र-स्तर में वृद्धि तथा प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति भारत की रक्षा योजना एवं सैन्य अवसंरचना को भी प्रभावित कर रही है। अतः रक्षा कूटनीति में अब पर्यावरणीय सुरक्षा, आपदा प्रबंधन तथा मानवीय सहायता (HADR) को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है।

9. उभरती प्रौद्योगिकियाँ एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्वांटम कंप्यूटिंग, हाइपरसोनिक हथियार, स्वायत्त ड्रोन, रोबोटिक युद्ध प्रणाली तथा अंतरिक्ष-आधारित सैन्य तकनीक भविष्य के युद्धों की प्रकृति को बदल रहे हैं। यदि भारत इन उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास एवं उपयोग में पीछे रह जाता है, तो उसकी सामरिक क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसलिए अनुसंधान एवं विकास, रक्षा नवाचार तथा अंतरराष्ट्रीय तकनीकी सहयोग को और अधिक सुदृढ़ करना समय की आवश्यकता है।

समग्रतः भारत की रक्षा कूटनीति के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ केवल पारंपरिक सैन्य खतरों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राजनीतिक, आर्थिक, तकनीकी, समुद्री, साइबर तथा पर्यावरणीय आयामों तक विस्तृत हो चुकी हैं। इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान रणनीतिक स्वायत्तता, रक्षा आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन, बहुपक्षीय सहयोग, उन्नत प्रौद्योगिकी, सक्षम कूटनीति तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के समन्वित दृष्टिकोण के माध्यम से ही संभव है। बदलती वैश्विक भू-राजनीति में भारत की रक्षा कूटनीति की सफलता इसी बात पर निर्भर करेगी कि वह राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए क्षेत्रीय एवं वैश्विक स्थिरता में कितना प्रभावी योगदान दे पाता है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद भारत की रक्षा कूटनीति ने आदर्शवादी दृष्टिकोण से आरंभ होकर एक व्यावहारिक, बहु-आयामी तथा रणनीतिक स्वरूप ग्रहण किया है। बदलती वैश्विक भू-राजनीति, महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा, तकनीकी क्रांति, समुद्री सुरक्षा, साइबर खतरों तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था ने भारत को अपनी रक्षा नीति एवं कूटनीतिक रणनीतियों का पुनर्संरचना करने के लिए प्रेरित किया है। आज भारत केवल दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि वैश्विक रणनीतिक परिदृश्य का एक प्रभावशाली सहभागी बन चुका है। आने वाले समय में आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन, सामरिक स्वायत्तता, बहुपक्षीय सहयोग तथा तकनीकी नवाचार भारत की रक्षा कूटनीति की सफलता के प्रमुख आधार होंगे।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ-



1. ल बर्नार्ड कोहेन, जियोपॉलिटिक्सरू द जियोग्राफी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स, थर्ड एडिशन, रोमन एंड लिटिलफील्ड पब्लिशर्स, लैनहम, मैरीलैंड, 2015, पृ. 11–18
2. हैलफोर्ड जे. मैकिंडर, द जियोग्राफिकल पिवट ऑफ हिस्ट्री, द जियोग्राफिकल जर्नल, वॉल्यूम 23, संख्या 4, रॉयल जियोग्राफिकल सोसाइटी, लंदन, अप्रैल 1904, पृ. 421–437
3. निकोलस जे. स्पाइकमैन, अमेरिकाज़ स्ट्रैटेजी इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स, द यूनाइटेड स्टेट्स एंड द बैलेंस ऑफ पावर, हारकोर्ट, ब्रेस एंड कंपनी, न्यूयॉर्क, 1942, पृ. 41–58
4. स्टीफन पी. कोहेन, इंडियारू इमर्जिंग पावर, ब्लकिंग्स इंस्टीट्यूशन प्रेस, वॉशिंगटन डी.सी., 2001, पृ. 103–105
5. श्रीनाथ राघवन, वार एंड पीस इन मॉडर्न इंडियारू ए स्ट्रैटेजिक हिस्ट्री ऑफ द नेहरू इयर्स, 2010, पृ. 273
6. श्रीनाथ राघवन, 1971रू ए ग्लोबल हिस्ट्री ऑफ द क्रिएशन ऑफ बांग्लादेश, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स, 2013, पृ. 67
7. एश्ले जे. टेलिस, इंडियाज़ इमर्जिंग न्यूविलयर पोस्टचर, बिटवीन रिसेस्ड डिटरेंट एंड रेडी आर्सेनल, रैंड कॉर्पोरेशन, सांटा मोनिका, कैलिफोर्निया, 2001, पृ. 3–45
8. मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2024–25, नई दिल्ली, 2025, पृ. 13–46
9. सॉल बर्नार्ड कोहेन, जियोपॉलिटिक्स, द जियोग्राफी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स, पृ. 29–52
10. डेविड एम. मेलोन, डज़ द एलीफेंट डांस? कंटेम्पररी इंडियन फॉरेन पॉलिसी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2011, पृ. 421–448
11. मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2023–24, नई दिल्ली, 2024, पृ. 86–94
12. मिनिस्ट्री ऑफ डिफेन्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2024–25, नई दिल्ली, 2025, पृ. 13–46
13. मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, एनुअल रिपोर्ट 2023–24, नई दिल्ली, 2024, पृ. 61–74.

Cite this Article

"मुकुल कुमार", "बदलती वैश्विक भू-राजनीति और भारत की रक्षा कूटनीति रु स्वतंत्रता के बाद का ऐतिहासिक अध्ययन, and Functional Restoration" Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:2, Issue:04, July-August 2026

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."